राज
कॉमिक्स
संख्या 0255
विनाश के
वृक्ष
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
सुपरकमांडो
ध्रुव
KADAM
इस
कॉमिक्स के
साथ एक स्टीकर

सुपर कमांडो ध्रुव

विनाश के वृक्ष

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादन : मनीष चंद्र गुप्त
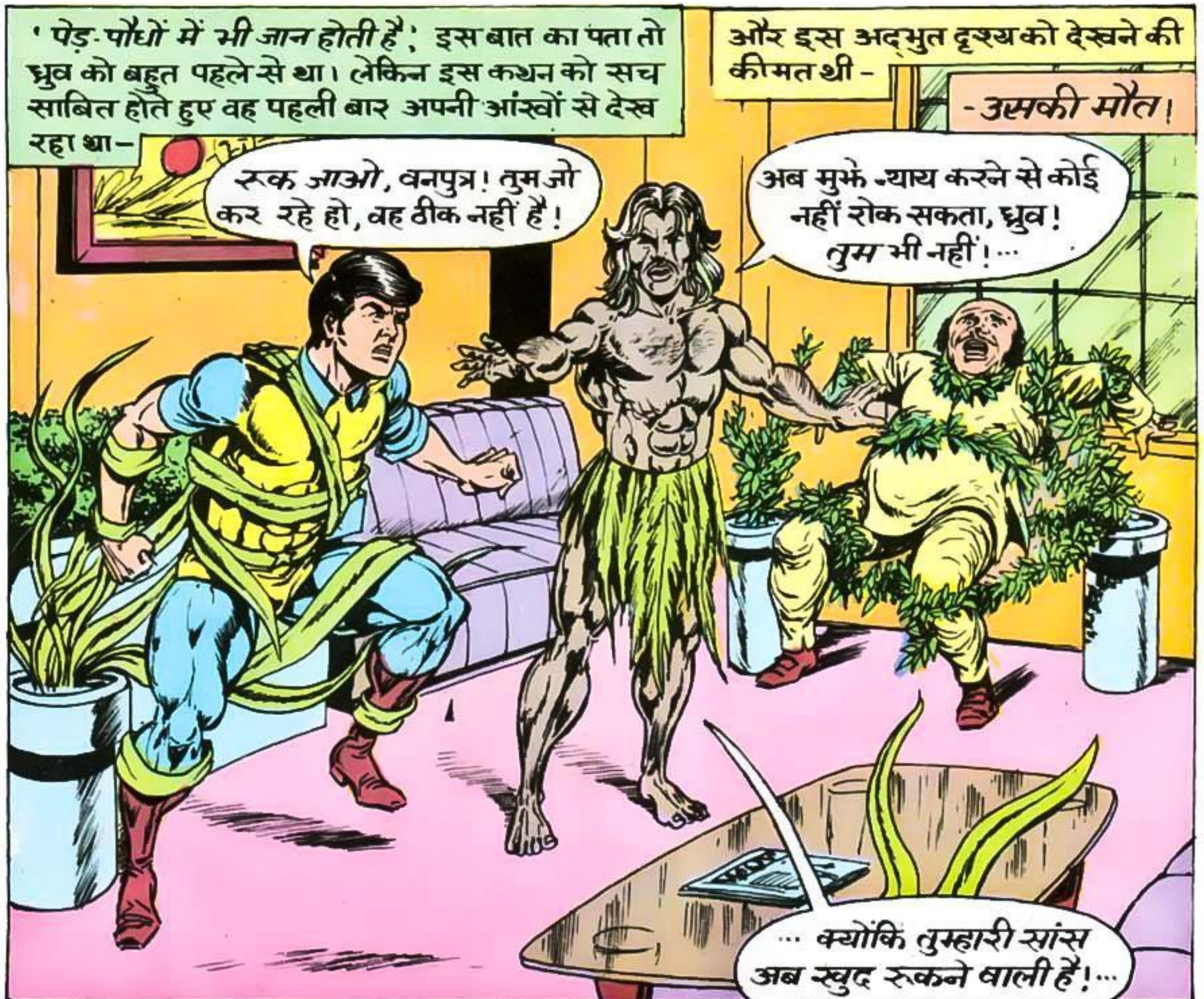
हजारों वर्ग मील के इलाके में फैले, 'नेशनल फॉरेस्ट' के घने जंगल, अपने अंदर कितने रहस्य छिपाए हुए हैं, इसका पता खुद 'फॉरेस्ट गार्डों' को भी नहीं है–
इन पेड़ों के बीच में सिर्फ दुर्लभ जंगली पशु-पक्षी ही नहीं, बल्कि कई ऐसे कबीले भी जिंदा हैं, जिनके बारे में कोई कुछ नहीं जानता।
हम 'फॉरेस्ट गार्डों' की ड्यूटी, इन जंगलों के साथ-साथ, पशु-पक्षियों और कबीलों की रक्षा करना भी है।
यह तो मैं समझ गया! लेकिन, शेखर, तुमको खतरा किससे है, यह भी तो बताओ।

गैर-कानूनी शिकारियों से! और उनसे भी ज्यादा पेड़ों की गैरकानूनी कटाई करने वालों से! वे लोग इतनी अंधाधुंध गति से पेड़ों की कटाई करते हैं कि जल्दी ही तुम को इस जंगल की जगह रेगिस्तान नजर आएगा!
ऐसा है तो तुम उन अपराधियों को पकड़ते क्यों नहीं?

चाहते तो हम भी यही हैं, ध्रुव! लेकिन हमारे लिए फिलहाल, हजारों मील में फैले इस जंगल पर नजर रखना संभव नहीं हो पा रहा है। इसीलिए तो हमारे डिपार्टमेंट ने अपनी सुरक्षा-व्यवस्था मजबूत करने के लिए तुमसे राय मांगी है!
वन तो हमारी संपत्ति हैं! उनको बचाने के लिए तो मैं हमेशा ही तैयार...!

ओ माई गॉड!!
क्या हुआ, शेखर?
वह देखो, ध्रुव! किसी ने पेड़ों को काटकर यह नया रास्ता बनाया है!

हुम! और ये देखो! जमीन में ये गड्ढे!
हां! लेकिन इन गड्ढों से क्या...?
ये हाथी के पैरों के निशान हैं, शेखर!
कुछ गड़बड़ तो जरूर है। आओ, देखते हैं कि क्या चक्कर है!

और घने जंगलों के अंदर-

जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ, काहिलो! इतनी देर से एक ही पेड़ काट रहे हो!

कभी भी, कोई खूंखार जंगली जानवर या फॉरेस्ट गॉर्ड यहां आ सकता है!

बस, साहब! अभी थोड़ी देर में काम हुआ जाता है।

आरी के पैने दांत पेड़ के तने में धंसते चले गए।

लेकिन पेड़ की यह कराह अनसुनी नहीं गई। किसी ने यह कराह सुनी...
आंर्रर्र...
...और उसकी क्रुद्ध सुर्ख आंखों में खून उतर आया।

जल्दी करो! हमारे पास सिर्फ आधे घंटे का समय बचा है!
अमां, नम्बूदरी सेठ के आदमी होकर इतना डर रहे हो? हमें कौन पकड़ेगा? हां?
जो भी हमारे रास्ते में आएगा, उसका मुंह या तो नोटों से बंद कर देंगे, और या उसकी जुबान हमेशा के लिए...!
रुक जाओ हत्यारो!
सबके सिर एक साथ घूम गए–
सभी आंखों में भय झलकने लगा।–

जो अगले ही पल गायब हो गया–
क्योंकि उनके सामने फॉरेस्ट गॉर्ड नहीं–
बल्कि एक जंगली खड़ा था।

हाहाहा! एक सेकेंड के लिए तो साला दिल धड़कना ही भूल गया था!
यह जंगली तो बोलना भी जानता है! कहो, क्या चाहते हो?
न्याय! खून का बदला खून! इन पेड़ों की मौत का बदला तुम लोगों की मौत!
पेड़ों की मौत!? यह तो कोई पागल लगता है, शेट्टी!
लेकिन इसने हमें पेड़ काटते देख लिया है। अगर इसने रिपोर्ट कर दी तो झमेला हो जाएगा!
फिर कहो तो इसकी खोपड़ी में छेद कर दूं!

नहीं, नहीं! पिस्तौलें बहुत हल्ला करती हैं!
ये बेचारा तो देवा के पैरों तले कुचल कर मारा जाएगा!
खतरनाक जंगल में एक दर्दनाक हादसा!
चल, देवा!

देवा के खंभे जैसे मोटे पैर, जंगली को कुचल देने के लिए आगे बढ़े –
लेकिन वह जंगली अपने स्थान पर शांत खड़ा रहा–
सिर्फ उसके हाथ हवा में उठे, और उसके मुंह से एक बुदबुदाहट उभरी।

अगले ही पल- एक सरसराहट के साथ, उसके अगल- बगल में उगे, छोटे- छोटे पौधे देखते ही देखते–
विशाल वृक्ष का रूप धारण करने लगे!!

देवा का भीमकाय शरीर अपनी गति रोक नहीं पाया–
और अपने रास्ते में एकाएक उग आई उस बाधा से जा टकराया–
धड़ाक
टक्कर जोरदार थी।

देवा एक चिंघाड़ के साथ जमीन पर आ गिरा–
पेड़ की जड़ें भी हिल गईं–
चियाँ यँ यँ
लेकिन फिर भी, वह अपने स्थान पर खड़ा रहा।

सभी की आंखें आश्चर्य से गोल हो गईं–
य... यह तो कोई जादूगर लगता है, स्वामी! मैं तो (गुटक) कहता हूं कि यहां से भाग लो!
स्वामी ने मुसीबत से भागना नहीं सीखा, शेट्टी!
बल्कि उसको खत्म कर देना सीखा है!

स्वामी की उंगलियां रायफल के इर्द-गिर्द कसने लगीं–
एक धमाका हुआ–
धांय
निशाना सच्चा था।

गोली जंगली के सीने की तरफ तेजी से लपकी–
लेकिन वह जंगली अपने स्थान पर ही खड़ा रहा–
उसको यह नहीं पता था कि यह धमाका मौत की आवाज है, और गोली उसकी मौत!

लेकिन किसी को शायद यह बात पता थी–
पेड़ की एक डाल अपने-आप ही आगे बढ़कर गोली और जंगली के बीच में आ गई–
और गोली ने अपना रास्ता बदल दिया–
लेकिन पूरी तरह से नहीं–
जंगली के दिल की तरफ बढ़ती गोली, कंधे से रगड़ खाती हुई निकल गई–
आ ऽऽऽऽह
और एकाएक- जंगली के गले से एक चीख उभरी।

इस चीख ने जंगली के अंदर सोए वहशी को जगा दिया –

और अगले ही पल सारा *जंगल फट* पड़ा। चारों तरफ से बढ़कर पेड़, डालों, बेलों और जटाओं ने हर चीज को अपनी *गिरफ्त* में ले लिया –

किसी को कोई मौका नहीं मिला।

आक! ह...हमको ..हमको छोड़ दो!

छोड़ दूं? अपने दोस्तों को बेदर्दी से *काट* डालने वालों को छोड़ दूं?

कभी नहीं!

अब ये *बेबस* तुमसे बदला लेंगे! ये *तुम्हारी जान* लेंगे!

नहीं, नहीं!! इसमें हमारा कोई कुसूर नहीं है! ये सब तो हमने अपने मालिक *नंबूदरी* के हुक्म से किया है!

हां! अगर वह हमसे नहीं कहता, तो हम ये *पेड़* कभी नहीं काटते!

तो इस हरियाली का *असली दुश्मन* तेरा मालिक नंबूदरी है!!

अब तुम लोगों को मुझसे कोई नहीं बचा सकता।
जंगली एक बार फिर से बुदबुदाया—
?
और जटाओं ने सबकी गर्दनों को दबाना शुरू कर दिया।

आश्चर्य!! पेड़ इस की बात मान रहे हैं!!!
लेकिन इसको यह सब करने से रोकना होगा!
समझाने का समय नहीं था।
ध्रुव को अपनी बात बलपूर्वक ही मनवानी थी।

लेकिन जंगली सतर्क था—
तू भी इनका दोस्त है! तो ले, तू भी मर!
इशारा मिलते ही एक डाल ने तेजी से बढ़कर ..

...ध्रुव और शेखर की गर्दनों को अपनी गिरफ्त में ले लिया—
अक़!
आ!!
और फंदा धीरे-धीरे कसने लगा।

अब वनपुत्र न्याय करेगा!
हत्यारों को सजा मिलेगी!
मौत की सजा!
ध्रुव, वनपुत्र को जाते हुए नहीं देख पाया।

क्योंकि इस समय पहला सवाल 'जिंदगी या मौत' का था—
जिसका जवाब 'मौत' था—
लेकिन तभी- मौत से लड़ते ध्रुव की नजर देवा पर पड़ी

और उसको जवाब मिल गया।
चियांड़ऽऽऽ!
एक धीमी चिंघाड़ की आवाज सुनकर देवा ने आंखें खोलीं। कोई दोस्त उसे मदद के लिए पुकार रहा था।
चिंघाड़!!
दूसरी पुकार ने देवा के शरीर में फुर्ती भर दी–
वह एक झटके से उठ खड़ा हुआ।

और आगे लपका–
अब तक ध्रुव और शेखर का चेहरा पीला पड़ने लगा था
ध्रुव की आवाज निकलनी बंद हो चुकी थी

लेकिन देवा को संदेश मिल चुका था–
उसकी पहली टक्कर से पेड़ की जड़ें वैसे भी कमजोर पड़ चुकी थीं–
धड़ाक
उसके दूसरे धक्के से पेड़ जड़ से उखड़ गया।

ध्रुव और शेखर के गले में पड़ा डाल का फंदा तुरंत ढीला पड़ गया–
ओह!
ध्रुव, उधर देखो!

दूसरे लोग उतने भाग्यवान नहीं थे–

अब कुछ नहीं किया जा सकता, शेखर! ये सब मर चुके हैं!
ओ माई गॉड! यानि वह जंगली तो बहुत खतरनाक है!
उसके पास अदभुत शक्ति है, शेखर! जैसे मैं पशु-पक्षियों से बात कर सकता हूं, वैसे वह पेड़-पौधों से बातें कर सकता है!

सिर्फ यही नहीं! पेड़-पौधे उसके आदेश पर अपना आकार बढ़ा लेते हैं, और आश्चर्यजनक हरकतें कर सकते हैं!
और ये बातें उसको और भी खतरनाक बना देती हैं!
अब न जाने वह क्या करेगा?
हमको सिर्फ इतना ही पता है कि वह शहर की तरफ गया है!

लेकिन शहर में कहां?
यह तो सिर्फ इन लोगों से पता चल सकता था! लेकिन अब इनकी जुबानें हमेशा के लिए खामोश हो गई हैं!
इस वक्त हम सिर्फ एक ही काम कर सकते हैं!
पूरे राजनगर की पुलिस को एलर्ट करने का!
मेरी मोटरसाइकल में 'पुलिस-बैंड ट्रांसमीटर' लगा है! उससे हम पुलिस हैडक्वॉटर को तुरंत मैसेज भेज सकते हैं!
तो चलो!
लेकिन इस चक्कर में असली काम तो रह ही गया! तुम्हारी सुरक्षा-व्यवस्था का! इसके लिए मुझको दो बातों की जानकारी चाहिए!
पहली, कि यह पेड़ों की अवैध कटाई कहां-कहां और किस-किस दिन हुई! ...

... और दूसरी यह कि, उस-उस दिन, उन एरिया में किस-किस 'फॉरेस्ट गॉर्ड' की ड्यूटी लगी थी!
यह रिपोर्ट तो तुरंत मिल जाएगी! लेकिन इससे फायदा क्या होगा?
इससे मुझे, यह समझना काफी आसान हो जाएगा कि 'नेशनल फॉरेस्ट' की सुरक्षा-व्यवस्था को और ज्यादा मजबूत कैसे बनाया जाए!

दूसरी तरफ- नंबूदरी की तलाश में वनपुत्र राजनगर में आ चुका था-

शहर का वातावरण वनपुत्र के लिए अंजाना और डरावना था। लेकिन वह भयभीत नहीं था—

कभी इस जगह पर हरा-भरा जंगल हुआ करता था, दोस्त! लेकिन तुम्हारे जैसे *लाखों* पेड़ों की हत्या करके यहां पर *मिट्टी* के ऊंचे घर बना दिए गए!

आखिर ये *इंसान* कब समझेंगे, कि तुम्हारी जान की भी कोई कीमत है!

तुम लोग इनको क्या कुछ नहीं देते? लेकिन बदले में ये तुम्हारी *लाशों* का सौदा करते हैं!

इसकी *कीमत* इन *सबको* चुकानी पड़ेगी!

और शुरुआत होगी... *नंबूदरी* से!

वह कौन है, सर?

कहीं यह वही तो नहीं, जिसके लिए शहर में *'रेड एलर्ट'* जारी किया गया है?

इस जंगली के लिए?

लगता तो नहीं, पर हो सकता है कि यह वही हो! चलो, देख ही लिया जाए!

ऐ! कौन है तू? यहां क्या कर रहा है?

हमारी बात समझ रहा है न? कुछ बोलता क्यों नहीं?

तुम भी कमाल करते हो, हवलदार?

यह अनपढ़ और जाहिल जंगली, हमारी भाषा कैसे समझेगा?

तो इसको दूसरी भाषा में समझाता हूं, साब!

चल हमारे साथ!

लेकिन हवलदार वनपुत्र को हिला तक नहीं पाया।

तुम जानते हो कि नंबूदरी कहां रहता है?

अरे! तू तो हमारी भाषा जानता है!!

नंबूदरी! कौन नंबूदरी? ...अ... अच्छा, नंबूदरी!! हां, हां! चलो, हम तुमको उसके पास ले चलते हैं!

वनपुत्र ने चलने के लिए कदम आगे बढ़ाया। पर तभी, पेड़ के पत्ते बगैर हवा के हिलने लगे–

वातावरण में एक सरसराहट उभरने लगी। पेड़, वनपुत्र को कुछ बता रहा था।

तो तुम मुझे पकड़ने आए हो! नादान इंसानो, वनपुत्र को पकड़ना खेल नहीं है!

वनपुत्र ने हल्का सा एक इशारा किया–

और पेड़ की मोटी जड़ें, सड़क की सतह को फोड़ कर बाहर निकलने लगीं–

!!

?

और शहर के, एक हिस्से में-
सेठ! नंबूदरी सेठ!! गजब हो गया!
क्या हो गया? तेरे पीछे पीपल का भूत लग गया क्या?
माल गोदाम तक पहुंचा या नहीं?

माल (हफ़) को छोड़ो, सेठ! हमारे सारे आदमियों को पेड़ों ने मार डाला!!
रास्ते में ठर्रा पीता हुआ आया है क्या? बोलना भी नहीं आता! ऐसा बोल कि आदमी पेड़ के नीचे दब गए!
लेकिन सारे के सारे आदमी एकसाथ पेड़ के नीचे कैसे दब सकते हैं?

दबे नहीं, सेठ! पेड़ों ने उनका गला दबा कर (हफ़) मार डाला!
क्या बकता है, गधे?
सच बोलता हूं, सेठ! पेड़ों ने ऐसा एक जंगली के इशारे पर किया है!
और... और... अब वह आपको मारने के लिए शहर आया है!

मुझे मारने के लिए, या मेरे हाथों से मरने के लिए!
यही चंडूखाने की गप्प सुनाने आया था यहां पर? क्यों मुझे गुस्सा दिला कर, एक और कत्ल करने पर मजबूर करता है?

जा भाग!
गुस्से से ब्लड-प्रेशर बढ़ जाता है, नंबूदरी! तुम्हारा आदमी सौ प्रतिशत सच बोल रहा है!
उसको यह सब मैंने ही बताया है!
कौन है, बे?

ओहो! फॉरेस्ट गार्ड नायर!
क्या मैं तेरे को 'हफ्ता' इसीलिए देता, कि तू मेरे को गप्पें सुनाया करे?
खबर सही है, नंबूदरी! तुम्हारे सारे आदमी एक जंगली ने मार डाले हैं!
और अब वह तुमको ढूंढ़ने शहर में आया है!
वह तुमको पेड़ों का हत्यारा समझता है!

और सुनो! किसी गलतफहमी में न रहना! उस जंगली के पास वाकई अद्भुत ताकत है! पेड़-पौधे उसकी बात पालतू की तरह मानते हैं!
वैसे पूरे शहर में पुलिस ने उसको पकड़ने के लिए 'रेड-एलर्ट' कर दिया है!
लेकिन फिर भी मेरी मानो तो सावधान रहना!
और पुलिस-हैडक्वार्टर में-
हमारी एक पुलिस-पार्टी को उस जंगली का पता चल गया था, ध्रुव! लेकिन ...(गटक)... लेकिन... अब मैं कैसे कहूं,... लेकिन उनकी जीप को एक पेड़ों की जड़ों ने तोड़ दिया!
जब मुझे यह रिपोर्ट मिली, तो ऐसा लगा कि 'पुलिस-रिपोर्ट' नहीं, बल्कि 'चंद्रकांता संतति' की कहानी है!

यह कहानी नहीं, बल्कि आश्चर्यजनक सत्य है, सर! उस जंगली वनपुत्र के पास अद्भुत शक्ति है! फिर वह कहां गया?
पता नहीं!
कोई भी पुलिसवाला उसका पीछा नहीं कर पाया! लेकिन वह कब तक छिपेगा? उसका पता तो हम लगा ही लेंगे!

वैसे अगर हमको उसका शहर में आने का कारण पता होता, तो उसको ढूंढ़ने में ज्यादा आसानी रहती!
यह पता चला क्या कि जंगल में मरने वाले किसके आदमी थे?
अभी तक उनकी शिनाख्त नहीं हो पाई है!
लेकिन उम्मीद है कि जल्दी ही हो जाएगी!

उधर-वनपुत्र की तलाश जारी थी—
यह रही पेड़ों की-एक कब्रगाह!
यहां से मुझे नम्बूदरी के बारे में जानकारी जरूर मिलेगी!

और-अंदर-
चलो, अहमद! अब दुकान बंद की जाए!
अब तुम्हारी दुकान हमेशा के लिए बंद होगी!
छनाक
कौन है, भाई?

वनपुत्र की शख्सियत किसी के भी दिल में डर पैदा करने के लिए काफी थी—
क...कौन हो तुम?

दूसरी तरफ–
ओफ्! यह फोन भी, जब जरूरी हो, तब कभी नहीं मिलता!
किसको फोन मिला रहे हो, कैप्टेन?
फॉरेस्ट ऑफीसर शेखर को!

मुझे उससे एक रिपोर्ट लेनी थी! न जाने क्यों, अब तक उसकी तरफ से कोई खबर ही नहीं आई!
ऐसा है, तो मैं 'फॉरेस्ट-गार्ड हैडक्वार्टर' जा कर रिपोर्ट ले आता हूं! शेखर तो ऑफिस में ही होगा न?

हां! आजकल उसकी चौबीस घंटे की ड्यूटी चल रही है! वह ऑफिस में ही होगा!
ओ॰के॰ तो मैं चलता हूं! रेणु भी अब ड्यूटी संभालने आती ही होगी!

अहमद और खालिद की समस्या अभी सुलझनी बाकी थी—
खामख्वाह डर रहे हो खालिद, यह तो कोई आदि-वासी है!
कहो! कोई काम-वाम चाहिए क्या? या भूख लगी है? खाना चाहिए!

मुझे नंबूदरी चाहिए!
नंबूदरी? क..क... कौन नंबूदरी?

वही नंबूदरी, जो तुम्हारी तरह इन पेड़ों की लाशों का व्यापार करता है!
पेड़ों की लाश!? यानि ये लठ्ठे?
यह नंबूदरी सेठ की बात कर रहा है, अहमद, जो हमें दो नंबर वाला माल सप्लाई करता है! इसे कुछ मत बताना!...

मुझे तो इसके इरादे ठीक नहीं लगते!
तुम तो जन्मजात डरपोक हो, खालिद!
बहुत नाटक हो गया!
मैं इसको अभी उठाकर बाहर फेंक देता हूं!

अब तू जाता है, या धक्का मार कर बाहर निकालूं ?
अहमद का हाथ वनपुत्र को धक्का मारने के लिए आगे बढ़ा—
लेकिन वहीं पर रुक कर रह गया—
यह... क्या?
खालिद, ब..बचाओ!

अगले ही पल- नाजुक पत्ती ने अहमद को हवा में उछाल दिया—
अरे, मर गया!!
खालिद ने यह भयावह दृश्य देखकर, बौखला कर कुल्हाड़ी उठा ली—
भा.. भाग जा, जंगली!
नहीं तो...तुझे भी इन लट्ठों की तरह काट डालूंगा!

हः! अभी देखते हैं कि कौन किसको काटता है!
वनपुत्र के हल्के से इशारे पर-

एक दूसरे पौधे ने बढ़ कर खालिद का हाथ पकड़ लिया। कुल्हाड़ी घूमकर खालिद की गर्दन पर आ टिकी—
इसी से पेड़ों के टुकड़े-टुकड़े करते हो न ?

अब देखते हैं कि यह तुम्हारी गर्दन के टुकड़े कर पाती है या नहीं?
नहीं!
मुझे छोड़ दो!
तो फिर बता! नंबूदरी कहां मिलेगा?

छाया.. छाया टावर में!
मुझे तेरे शहर के रास्ते नहीं पता! तुझे मेरे साथ वहां तक चलना होगा!
चलूंगा! चलूंगा
पर पहले इसे मेरी.. गर्दन पर से हटाओ!

चलो!
लेकिन याद रखना! अगर चालाकी दिखाने की कोशिश की, तो फिर तुमको कभी सांस लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी!

दूसरी तरफ–
तुम्हारे वनपुत्र का तो कोई पता नहीं चला, ध्रुव! लेकिन जंगल में मरे उन आदमियों की शिनाख्त हो गई है!
कौन थे वे आदमी?
वे नंबूदरी के आदमी थे! टिम्बर किंग नंबूदरी! जिसने पेड़ों की अवैध कटाई से बेहिसाब पैसा कमाया है!
हम उसके बारे में बहुत दिनों से जानते हैं! लेकिन अब तक हमारे हाथों ऐसा कोई सबूत नहीं लग पाया जिससे कि हम उसको पकड़ सकें!
टिंबर किंग नंबूदरी!
वनपुत्र जरूर उसी की तलाश में शहर आया है!

और अगर मेरा शक सही है तो नंबूदरी की जान खतरे में है!
तुम एकाएक खड़े क्यों हो गए, ध्रुव?
मै वनपुत्र की तलाश में निकलता हूं, सर! कुछ भी पता लगते ही आपको तुरंत खबर करूंगा!
और 'फॉरेस्ट गार्ड्स हैडक्वार्टर' में–
अरे, यहां तो कोई भी नहीं है! लगता है कि ईश्वर कहीं निकल गया!
ठक ठक ठक ठक
इतनी दूर आना जाना बेकार ही...!
नहीं! कोई आ रहा है!

लेकिन पैरों की आहट सामने वाले दरवाजे के बजाय, पीछे वाले दरवाजे से आ रही है! यानि कुछ गड़बड़ है!
ठक ठक ठक ठक
फिलहाल मुझे छिप कर स्थिति का जायजा लेना चाहिए!

ऑफिस में दबे पांव घुसने वाला व्यक्ति शेखर नहीं था। और न ही उसके बदन पर फॉरेस्ट गॉर्ड की वर्दी थी।
और उसने जो कुछ देखा, उससे उसकी आंखें फैलती चली गईं। मामला निश्चित तौर पर गड़बड़ था–
पीटर ने कुछ करने से पहले अभी और देखने का निर्णय लिया।

इस नई बात से अंजान ध्रुव नंबूदरी की तरफ बढ़ रहा था–

जबकि वनपुत्र पहले ही नंबूदरी तक लगभग पहुंच चुका था–
नंबूदरी य... यहीं पर रहता है!
लेकिन तुम उसतक जिंदा नहीं पहुंच पाओगे!...

क्योंकि नंबूदरी सेठ को तुम्हारे आने की खबर पहले ही लग चुकी है!
अब वह इस इमारत की सबसे ऊंची मंजिल पर आराम से बैठा होगा!
RAJ
राज
और हर मंजिल पर उसके आदमी, हाथों में हथियार लिए तुम्हारा ही इंतजार कर रहे होंगे!

लेकिन अब वनपुत्र को न्याय करने से कोई नहीं रोक सकता!

कोई नहीं!
पत्ती धीरे-धीरे खालिद की गर्दन पर कसने लगी–
और एक झटके से खालिद अपने होश खो बैठा।

वनपुत्र ने बाहर निकल कर चारों तरफ का जायजा लिया-

और फिर अंधेरे में गायब हो गया-

वनपुत्र को अंधेरे में ज्यादा साफ दिखाई पड़ता था।

ध्रुव अभी भी नंबूदरी से दस मिनट की दूरी पर था-

और वनपुत्र बहुत करीब-

पहरेदारों को मुंह खोलने का भी मौका नहीं मिला-

मुझे यह रोशनी पसंद नहीं है! इसको कैसे बंद किया जा सकता है?
जवाब में पेड़ की पत्तियां सरसराई।
इस लोहे की रस्सी को तोड़ने से?... यानि इसको तोड़ देने से रोशनी बंद हो जाएगी? बहुत आसान रास्ता है!
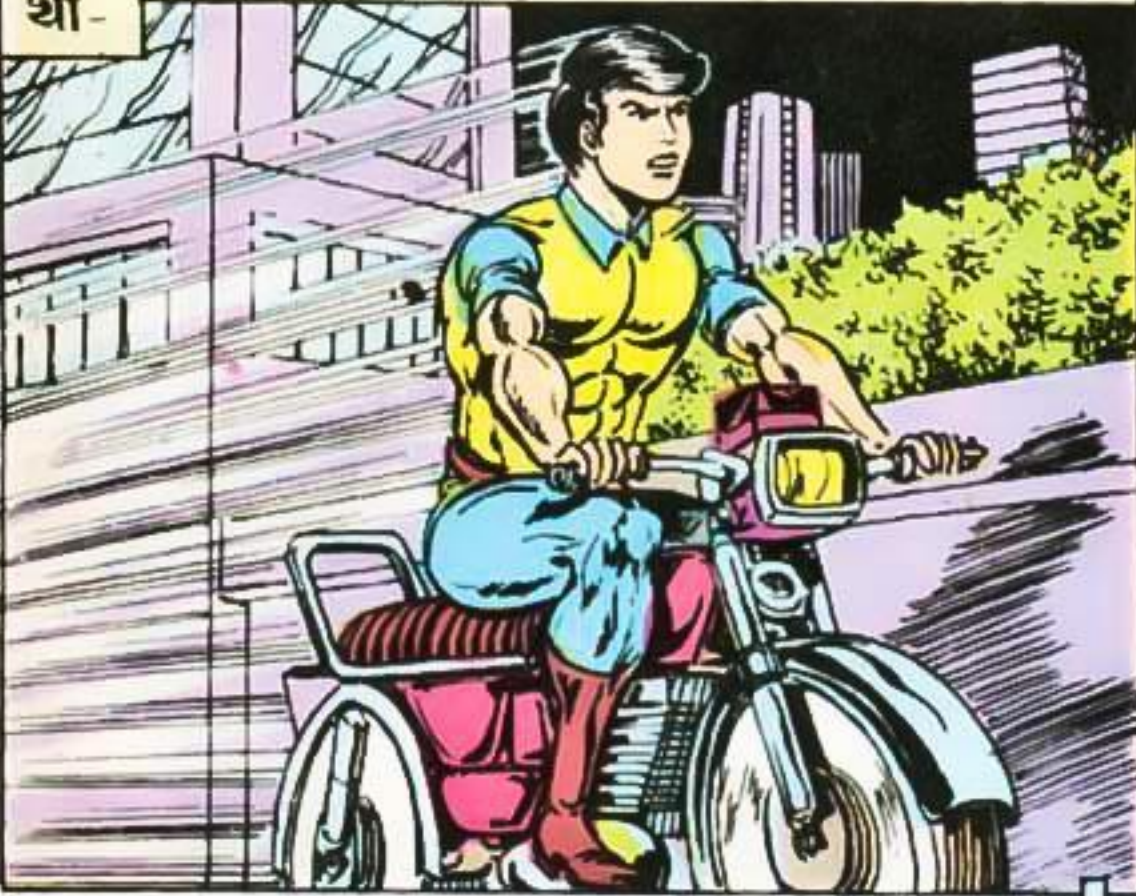
और अगले ही मिनट-एक पेड़ की डाल ने वनपुत्र के इशारे पर बढ़ कर...
कड़ाक
...बिजली के तार के दो टुकड़े कर दिए।

अब सवाल ऊपर चढ़ने का है, दोस्त!
वनपुत्र ने मुस्कुरा कर एक बेल को थपथपाया-

और बेल सांप की तरह बलखाती हुई ऊपर की ओर बढ़ने लगी-
वनपुत्र किसी बंदर की सी फुर्ती से साथ-साथ ऊपर चढ़ने लगा।

और देखते ही देखते अंधेरे के साथ घुलमिल गया

बिजली गुल होने से नंबूदरी की घबराहट बढ़ गई–

य...ये बिजली को क्या हुआ, कामा?

पता नहीं, सेठ!

आसपास की तो सारी बत्तियां जली हैं!

कहीं... कहीं वह फॉरेस्ट गार्ड सही तो नहीं बक रहा था?

शायद ये काम उसी (गड़ब) जंगली का है!

आप भी परियों की कहानी पर यकीन करने लगे, सेठ!

वैसे अगर वह सच में कोई है,...

और यहां तक आ गया है,...

तो यहां से उसकी लाश ही बाहर निकलेगी!

हर मंजिल पर हमारे आदमी बंदूकें लिए तैनात हैं!

मैं जेनरेटर चालू करता हूं!

कम से कम इस मंजिल पर तो लाइट आए!

जेनरेटर, धड़धड़ाहट के साथ स्टार्ट हुआ–

पिस्तौल उठी–
मगर चल नहीं पाई–
तड़

स..सही बोलता था! नायर सही बोलता था!
ये मेरे को मार डालेगा! खत्म कर देगा!
उससे पहले मैं इसको मच्छर की तरह मसल दूंगा, सेठ!

कामा वनपुत्र को मसल डालने के लिए आगे लपका–
धाड़
जंगल में पले, वनपुत्र का शरीर, खुद भी एक पेड़ के तने की तरह सख्त हो गया था–
लेकिन उसकी ये इच्छा अधूरी ही रह गई।

और उसकी आदतें वहशी जानवरों की तरह–

लेकिन वह आधुनिक कुश्ती के दांव-पेंच से वाकिफ नहीं था–
तड़ाक
जिसमें कामा को महारत हासिल थी।

अब मैं तुझे जरासंध की तरह दो टुकड़ों में चीर डालूंगा!
पकड़ मजबूत थी, और दर्द असहनीय!

लेकिन वनपुत्र चिल्लाया नहीं! बल्कि उसके मुंह से फिर एक हल्की सी सरसराहट निकली–
सर्रर्रर्र!

और कैक्टस के एक पौधे ने तेजी से बढ़कर कामा को अपनी लपेट में ले लिया—
एक साथ हजारों कांटों की चुभन को कामा सहन नहीं कर पाया।
और जमीन पर आ गिरा—
बोल नंबूदरी! अब तुझे कौन बचाएगा?

बचाने वाला बिल्डिंग के नीचे तक पहुंच चुका था—
ओह! यानि वन-पुत्र यहां तक आ पहुंचा है!
ये दोनों बेहोश पहरेदार इस बात की गवाही दे रहे हैं!

ये बिजली का तार भी टूटा हुआ है! .. पूरी बिल्डिंग अंधेरे में डूबी हुई है। सिर्फ टॉप फ्लोर पर अभी भी रोशनी हो रही है! शायद जेनरेटर चल रहा है! हल्की सी आवाज यहां तक आ रही है!
यानि लिफ्ट भी नहीं चल रही होगी!

और मुझे जल्दी से जल्दी टॉप फ्लोर पर पहुंचना है, क्योंकि नंबूदरी शर्तिया वहीं पर होगा! और शायद वनपुत्र भी! अब एक ही रास्ता है! बिजली का यह टूटा तार!
एक मोटा तार बिल्डिंग के ऊपर तक गया हुआ है! लगता है कि नंबूदरी ने ऊपर कोई फैक्ट्री लगाई हुई है, और उसके लिए यह अलग कनेक्शन लिया है।

अच्छा ही है!
क्योंकि इस वक्त मुझे यह पलक झपकते बिल्डिंग के ऊपर तक ले जाएगा!
ध्रुव के मजबूत हाथों ने तार को एक पेड़ की जड़ के साथ कस कर बांध दिया।

ध्रुव ने मोटरसाइकल को हल्का सा उछाला...
और अगला पहिया तार पर आ टिका–

लेकिन ध्रुव के लिए ऐसे खतरे रोजमर्रा की जिंदगी के हिस्से थे–
और ऐसे कामों में चूक करना ध्रुव ने नहीं सीखा था–

और ध्रुव की मोटरसाइकल एक खतरनाक सफर पर बढ़ चली–
एक ऐसे सफर पर, जिसमें जरा सी भी चूक का मतलब था,
कई सौ फुट से नीचे कड़ी जमीन पर गिरना–
जिसका नतीजा सिर्फ एक ही हो सकता था– एक दर्दनाक मौत!

रुक जाओ, वनपुत्र!
तुम अपने होश-हवास खो बैठे हो! तुम जो करने जा रहे हो, वह ठीक नहीं है!
तो तुम अपने दोस्त को बचाने यहां तक भी आ पहुंचे?

यानि अब मुझे पहले तुमसे निपटना होगा!

नंबूदरी मेरा दोस्त नहीं है! लेकिन उसको कोई भी सज़ा देना कानून का काम है! मेरा या तुम्हारा नहीं!
इसीलिए नंबूदरी को नुक्सान पहुंचाने से पहले तुमको ध्रुव को पार करना पड़ेगा!

ध्रुव को? हः! तुम जैसे कमज़ोर इंसानों से निपटना मेरे लिए कोई समस्या नहीं है!
?
ये काम तो मेरे साथी ही कर देंगे!

ओह! मैं समझता था कि तुम्हारा हुक्म सिर्फ जंगली वृक्षों पर ही चलता है!
पेड़-पौधे तुम इंसानों की तरह आपस में भेद भाव नहीं करते हैं, बच्चे!

इसीलिए तुम लोग पेड़-पौधों को कभी समझ नहीं सके, और इनको कसाईयों की तरह काटते रहे!
लेकिन तुम इनको इतनी अच्छी तरह से कैसे समझते हो?

यह विद्या हमारे वंश के पास सदियों से है! और अब यह विद्या इस दुनिया में सिर्फ मेरे पास है! मेरे पिता मृत्यु से पहले यह विद्या मुझे सौंप गए थे!

इनके पत्तों की सरसराहट कभी ध्यान से सुनोगे, तो खुद समझ जाओगे कि पेड़-पौधे तुमसे बात करना चाहते हैं!

और तुम्हारे आदेश पर ये अपना आकार इतनी जल्दी कैसे बढ़ा लेते हैं?
पेड़-पौधों में आश्चर्य जनक ऊर्जा इकट्ठी रहती है, जिसका क्या उपयोग किया जाए, यह खुद उनको नही पता रहता!

उसी ऊर्जा के इस्तेमाल से वे अपना आकार एक हद तक बढ़ा लेते हैं!
एक सवाल और!
तुम हमारी भाषा कैसे बोल लेते हो, वनपुत्र?

कैसे बोल लेता हूं? बड़ा अजीब सवाल है!
जो भाषा तुम्हारी है, वही भाषा हमारी है!
इस दौरान दोनों में से किसी का भी ध्यान नंबूदरी पर नहीं था।

जो अबतक आजाद हो चुका था–
अरे! यह दुष्ट आजाद हो गया!!
तुम मुझे जानबूझकर बातों में उलझाए रहे, ताकि तुम्हारा साथी मौका पाकर भाग सके!

नहीं, वनपुत्र! वह मेरा साथी नहीं है!
रुक जाओ, वनपुत्र!
मेरी बात सुनो!

लेकिन तब तक वनपुत्र कमरे से बाहर निकल चुका था–
ओह, नंबूदरी बहुत खतरनाक आदमी है!
अपनी सारी शक्तियों के बावजूद वनपुत्र उससे जीत नहीं पाएगा!

क्योंकि नंबूदरी उसको ऐसी जगह ले जाकर मारेगा, जहां पर वनपुत्र की मदद करने के लिए कोई भी पेड़-पौधा नहीं होगा!...
... और मैं उसको बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता!
क्योंकि इस पौधे ने मुझको इतनी कस के जकड़ रखा है, कि मैं हिल भी नहीं सकता!

उधर-नंबूदरी ने अपने छिपने की जगह ढूंढ़ ली थी–
इसी आरा-मशीन फैक्ट्री में उस जंगली की कब्र बनेगी!
यहां पर उसकी मदद करने के लिए कोई घास का तिनका तक नहीं है!

वह आ रहा है! मुझे उसके कदमों की आहट सुनाई दे रही है! अब इस शेड के बाहर या तो वह जंगली जिंदा निकलेगा!...
... और या फिर मैं!

जंगल में परवरिश पाए वनपुत्र के लिए, शिकार को ढूंढ निकालना मामूली बात थी—
वह यहीं कहीं पर छिपा हुआ है! मैं उसकी गंध सूंघ सकता हूं!...

... और एक बार में पता लगा सकता हूं,...

... कि वह कहां छिपा है!
धड़ाम
नंबूदरी को मजबूर हो कर बाहर निकलना पड़ा।

अब भागने से काम नहीं चलेगा! अब इसका मुकाबला करना ही पड़ेगा!

लेकिन मुकाबला करना बेवकूफी थी। क्योंकि वनपुत्र के शरीर में चीते सी फुर्ती—

और हाथी की ताकत थी—

लेकिन नंबूदरी को यह लड़ाई ताकत से नहीं, बल्कि दिमाग से लड़नी थी—
हाहा! बेवकूफ जंगली!...
अब तू ठीक वहीं पर खड़ा है, जहां पर मैं तुझे खड़ा करना चाहता था!

अब मैं तुमको ठीक वैसे ही मारूंगा, जैसे मैंने तुम्हारे दोस्त पेड़ों को मारा है!
हाहाहाहा!
अगले ही पल-एक शिकंजे ने वनपुत्र को हवा में उठा लिया।
और एक लंबी बेंच पर पटक दिया—
इससे पहले कि वनपुत्र कुछ समझ पाता-

उसके हाथ और पैर धातुओं के शिकंजों में कस गए।
?
क्लिक
क्लिक
टर्रर्र र्रर्रर्र

और एक गोल आरी तेजी से घूमती हुई वन-पुत्र के शरीर के टुकड़े करने को आगे बढ़ने लगी—
हाहाहा!
वनपुत्र की मदद करने के लिए आसपास कोई भी पौधा तक नहीं था।

उधर- ध्रुव अब तक पौधे के शिकंजे से निकलने की बेकार कोशिश कर रहा था—
ओफ्! यकीन नहीं हो रहा है कि मैं इस मामूली से पौधे की पकड़ से आजाद नहीं हो पा रहा हूं!
लेकिन कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही पड़ेगा! क्योंकि नंबूदरी या वनपुत्र, दोनों में से किसी एक की जान तो खतरे में है ही!
और मैं इन दोनों में से किसी को भी मरने नहीं दे सकता!

वनपुत्र ने कहा था, कि पौधे बात करते हैं! देखूं कि, वे मुझसे बात करते हैं या नहीं!
सुनो! मुझे छोड़ दो! तुम्हारे दोस्त की जान खतरे में है!
आश्चर्य! इसकी पकड़ तो सचमुच में ढीली पड़ रही है!!

इसका आकार भी छोटा हो रहा है!
मुझे तुम्हारे दोस्त को बचाना है! वर्ना वह मार दिया जाएगा!
पौधे को ध्रुव की सच्ची भावना का एहसास जरूर हो गया था, क्योंकि देखते ही देखते...

...पौधे ने ध्रुव पर से अपनी पकड़ छोड़ दी–
धन्यवाद, दोस्त!
अब देखूं कि वे दोनों कहां गए हैं!

बाहर कॉरीडोर के सन्नाटे को एक धीमी आवाज तोड़ रही थी–
यह तो आरा-मशीन की आवाज है!
यह आवाज उस तरफ से आ रही है! वे दोनों जरूर उसी ओर होंगे!

लकड़ी को मक्खन की तरह काटते हुए, आरी के तेज दांत, अब वनपुत्र के बदन में गड़ने के लिए बेताब हो रहे थे–

और जब तक ध्रुव वहां पहुंचता, तब तक वनपुत्र और आरी के बीच की दूरी एक बाल जितनी रह गई थी–
अब दिमाग से काम लेने का वक्त नहीं था।

अब वनपुत्र को अगर कुछ बचा सकता था, तो साहस का एक नायाब उदाहरण!

ध्रुव के फौलादी हाथ घूमती आरी के दांतों पर कस गए–
स्क्रीईच
और ध्रुव के हाथों को काटती हुई, आरी एक झटके से रुक गई।

अब आरी वनपुत्र को कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकती थी–
नंबूदरी यह सब देखकर बाहर भागा।

लेकिन ध्रुव उसके पीछे नहीं लपका–
क्योंकि वनपुत्र को आजाद कराना अभी बाकी था।
खट
खट
खट
ध्रुव कंट्रोल पेनल के सारे बटनों को एक एक करके दबाता चला गया।
और वनपुत्र के शरीर पर कसे धातु के शिकंजे खुल गए–
?
अब ध्रुव, नंबूदरी के पीछे लपका।
नंबूदरी ने वनपुत्र की हत्या का प्रयास करके अपराध किया था।

लेकिन नंबूदरी ने अब तक मदद के लिए जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया था–
राका! शेरा! जंगबहादुर! जल्दी ऊपर आओ!
लेकिन वह यह नहीं देख रहा था कि उस के पीछे क्या हो रहा है!

ध्रुव अबतक कमरे के दरवाजे पर आ चुका था!
लेकिन उसके कुछ कर पाने से पहले ही...

नंबूदरी का शरीर अपनी अंतिम यात्रा के लिए चल चुका था–
वनपुत्र का काम उसके साथी ने ही कर दिया था।

धन्यवाद दोस्त! मैंने तुमको मारने की कोशिश की, लेकिन फिर भी तुमने अपना खून बहाकर मेरी जान बचाई!
धन्यवाद की कोई जरूरत नहीं है। उस वक्त तुम्हारी जान खतरे में थी!

कायदे से अब मुझे तुम को पकड़ कर कानून के हवाले कर देना चाहिए! लेकिन दुनिया की कोई भी अदालत तुम्हारी कहानी पर यकीन नहीं करेगी।
इसीलिए बेहतर यही होगा कि तुम जंगल वापस लौट...
बीप! बीप!! बीप!!!

मेरे 'स्टार-ट्रांसमीटर' पर यह जरूर पीटर का मैसेज होगा?
हैलो! ध्रुव स्पीकिंग!
ध्रुव! पीटर हियर! खबर जोरदार है! तुम तुरंत यहां 'फॉरेस्ट गार्ड हैडक्वार्टर' आ जाओ! बाकी बातें मैं तुमको यहां आने पर बताऊंगा! ओवर!
ध्रुव जिस रास्ते से आया था, उसी से वापस लौट गया-
और फिर-फॉरेस्ट गार्ड हेडक्वार्टर में-
हैलो, शेखर! मैंने तुम्हारा केस हल कर दिया है!
कौन? ध्रुव! ओह! कैसा केस?
तुम्हारी सुरक्षा-व्यवस्था मजबूत करने वाला!
तुम्हारी सुरक्षा-व्यवस्था जैसी भी है, ठीक है! सिर्फ एक भेदिए फॉरेस्ट गॉर्ड ने उसको कमजोर बना कर रखा था!
वह नंबूदरी के पास यह खबर पहुंचाया करता था, कि नेशनल फॉरेस्ट के किस एरिया में, किस दिन फॉरेस्ट गार्ड नहीं रहेंगे! ताकि वह बेधड़क उस एरिया के पेड़ काट सके!
माई गॉड! कौन है वह जासूस?
उसका नाम नायर है, शेखर!
नायर? लेकिन इस नाम का तो कोई भी हमारे यहां नहीं है!
है, शेखर! और वह इसी कमरे में है!
क्या कह रहे हो? इस कमरे में तो सिर्फ मैं हूं, तुम हो, और पीटर है!
वह दिखेगा नहीं, शेखर! क्योंकि वह इस दराज के अंदर है!
दराज के अंदर!? क्या मजाक कर रहे हो?
मजाक नहीं, शेखर!..
तुम खुद ही देख लो!
यही है नायर! तुम्हारा दूसरा रूप!
यह... यह सब क्या है?
तुम मुझे क्यों फंसाना चाहते हो?
यह सामान मेरा नहीं है!
बनने की कोशिश बेकार है, शेखर! मैं तुमको अपनी आंखों से रूप बदलते देख चुका हूं!
अब मुझे समझ में आ रहा है कि सुबह तुम मुझे जंगल के अंदर क्यों नहीं जाने देना चाहते थे!

मैं समझ रहा था कि तुम डर रहे हो! वैसे तुम डर तो जरूर रहे थे, पर जंगली जानवरों के डर से नहीं, बल्कि पकड़े जाने के डर से!

यह तो तुम्हारी किस्मत अच्छी थी, कि हमारे वहां पहुंचने से पहले ही नंबूदरी के आदमी वनपुत्र के हाथों अधमरे हो गए थे!...
...वर्ना तुम वहीं पकड़े जाते!
शेखर के शर्म से झुके मुंह से कोई आवाज नहीं निकली।
इसे पुलिस-स्टेशन ले जाओ, पीटर! मैं थोड़ी देर में वहीं पर आता हूं!
और फिर-
तुमने मेरी आंखें खोल दीं, ध्रुव! अब मैं समझ गया कि वृक्षों के दुश्मन, नंबूदरी जैसे चंद लालची इंसान हैं!
तुम जैसे अच्छे इंसानों के हाथों, इस हरियाली और जंगलों का भविष्य सुरक्षित है!

मुझे खुशी है कि मैं शहर आकर तुम से मिला और इंसानों के बारे में मेरी सारी गलतफहमी दूर हो गई!
तुमने मेरी जान बचाकर मुझे अपना ऋणी बना लिया है!

अगर जिंदगी में कभी भी मेरी जरूरत पड़े, तो किसी भी पेड़ या पौधे से बोल देना! मैं तुम तक पहुंच जाऊंगा! विदा, दोस्त!
विदा, वनपुत्र!

बाद में-
तुमने वनपुत्र को भागने का मौका देकर बहुत बड़ी गलती की है, ध्रुव! वह एक हत्यारा है! उसको इस की सजा मिलनी ही चाहिए!
उसने किसी की हत्या नहीं की, सर! नंबूदरी और उसके आदमी पेड़ों में फंसकर मरे हैं!

फंस कर!?
पेड़ों ने उनकी हत्या वनपुत्र के इशारे पर की है!
क्या आप अदालत में, जज के सामने, यही बात दुहरा पाएंगे? या जज आपकी बात पर यकीन करेंगे?
हैं...तो... (गड़ब) नहीं करेंगे!
तो फिर एक अनोखी सभ्यता के वंशज को मारने का क्या फायदा?
चलो! इसको भी हम 'अनसुलझे केस' की लिस्ट में डाल देते हैं! ओ.के.?
समाप्त